डॉ. गणेश त्रिपाठी

जन्मकुंडली द्वारा वास्तु का परिज्ञान

वास्तु शास्त्र का प्रभाव मनुष्य के ऊपर जन्म से लेकर मृत्यु तक सदैव ही सकारात्मक और नकारात्मक रूप में पड़ता है किन्तु हमें उसका विधिवत् परिज्ञान न हो पाने के कारण हम उसके विज्ञान से वंचित रह जाते हैं। जब जातक धरा पर जन्म लेता है तो वह अपने आसपास के वास्तु से प्रभावित होता है। जातक का जन्म, गृह अथवा अस्पताल की किस दिशा विशेष में हुआ होगा? इसका परिज्ञान जातक की जन्म पत्रिका को देखकर किया जा सकता है। इसके द्वारा जातक की पत्री की लग्नशुद्धि भी की जाती है। पूर्व काल में दैवज्ञों के पास पर्याप्त यन्त्रों का अभाव होने के कारण अनेक प्रकार से लग्न की शुद्धि करते थे, जिसमें एक प्रकार यह भी है कि जातक के जन्म काल में सूतिका गृह कहाँ पर था। जिस कक्ष विशेष में जातक का जन्म होता है उसे सूतिका गृह कहते हैं तथा सम्पूर्ण आवास में वह सूतिका गृह किस दिशा में था अथवा अस्पताल के सम्पूर्ण भूखण्ड में सूतिका गृह किस दिशा में था, इसके परिज्ञान हेतु आचार्य वराहमिहिर में पाँचवी शताब्दी में ही अपनी अमर कृतित्व बृहज्जातकं (होराशास्त्रं) में कहा है कि –

मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु ।
पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ ।।

बृहज्जातकम् 5.20

यदि मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक और कुम्भ लग्नों में से किसी लग्न में जातक का जन्म होता है तो वह जातक समस्त भूखण्ड के पूर्व दिशा में जन्म लेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि इन लग्नों में सूतिका गृह समस्त वास्तु के पूर्व दिशा में होगा। यदि मिथुन, कन्या, धनु और मीन लग्नों में से किसी लग्न में जातक का जन्म हुआ हो तो उस जातक का जन्म समस्त वास्तु की उत्तर दिशा में होगा। इसी प्रकार किसी जातक का जन्म यदि वृष लग्न में हुआ हो तो जातक ने समस्त भूखण्ड के पश्चिम दिशा में जन्म लिया होगा, ऐसा चिन्तन करना चाहिए। पुनः यदि सिंह और मकर लग्न में जातक का जन्म होगा तो वह जातक समस्त वास्तु के दक्षिण भाग में जन्म लेगा। इसी प्रकार राशि से भी विचार करना चाहिए लग्न और राशि में जो अधिक बलवान् हो उसके द्वारा ही इसका परिज्ञान करना चाहिए। अर्थात् किसी जातक का जन्म मेंष लग्न और धनु राशि में हुआ है तो मेष और धनु में जो अधिक बलवान् होगा उसके आधार पर ही समस्त वास्तु में से दिशा का निर्धारण करना चाहिए। निम्न चक्र के माध्यम से इसको आसानी से समझा जा सकता है।

लग्न/राशि	मेष, कर्क,तुला, वृश्चिक, कुंभ	वृष	धनु, मीन, मिथुन, कन्या	मकर, सिंह
दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण

वास्तु द्वारा समस्त भूखण्ड में सूतिका गृह का परिज्ञान करने के पश्चात् उस सूतिका गृह के किस भाग में या किस दिशा में जन्म होगा या शयन होगा इसका परिज्ञान किया जाता है क्योंकि सूतिका गृह के किसी भी पूर्वादि भाग में जन्म हो सकता है। अतः सूक्ष्मता हेतु सूतिका गृह के वास्तु का परिज्ञान जन्मकालिक ग्रह स्थितियों के आधार पर किया जाता है। अस्पताल में सूतिका कक्ष में किस दिशा में गर्भिणी स्त्री का शीर्ष होगा अथवा चारपाई (बेड,पलंग, चौकी इत्यादि) की स्थिति क्या होगी? इसका भी परिज्ञान जन्मकालिक ग्रह स्थितियों को देखकर किया जाता है। इस विषय में आचार्य वराहमिहिर

कहते हैं कि

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः।
शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट् त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ।।
बृहज्जातकम् 5.21

यदि जातक का जन्म मेष या वृष लग्न में हो तो सूतिका गृह के पूर्व भाग में होता है अर्थात् पूर्व भाग में स्त्री का शयन होता है। यदि मिथुन लग्न में जन्म हो तो अग्निकोण में, कर्क या सिंह लग्नों में जन्म हो तो दक्षिण दिशा में, कन्या लग्न में जन्म हो तो नैर्ऋत्य कोण में, तुला या वृश्चिक लग्न में जन्म हो तो पश्चिम दिशा में, धनु लग्न में जन्म हो तो वायव्यकोण में, मकर या कुम्भ लग्न में जन्म हो तो उत्तर दिशा में तथा मीन में जन्म हो तो ईशान कोण में सूतिका स्त्री का शयन होता है अथवा जातक का जन्म होता है इन लग्नानुरूप दिशाओं में सूतिका का शीर्षभाग होता है अर्थात् जिस राशि की जो दिशा उपर्युक्त कही गई है उसी दिशा में सूतिका स्त्री का शीर्ष भाग होता है। इसी पद्धति को आधार मानकर दक्षिण भारतीय कुण्डली का निर्माण होता है। जो इस प्रकार से

लग्नवश प्रसूति कक्ष में वास्तु ज्ञान			
12 ईशानकोण	1 पूर्व	2 पूर्व	3 अग्निकोण
11 उत्तर			4 दक्षिण
10 उत्तर			5 दक्षिण
1 वायव्य	8 पश्चिम	7 पश्चिम	6 नैर्ऋत्य

सूर्यादि ग्रहों से विचारणीय प्रसूति कक्ष							
ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रसूति कक्ष	सामान्य लकड़ी युक्त	नवीन कक्ष	अग्नि दग्ध	अनेक शिल्पकारी से युक्त	मजबूत कक्ष	अनेक चित्रयुक्त रमणीय कक्ष	पुराना नव निर्मित कक्ष

निर्मित होता है –

इसके अतिरिक्त भी ग्रहों की स्थितियों का ज्ञान करना आवश्यक होता है जिसके आधार पर स्पष्ट रूप से सूतिका गृह के वास्तु का परिज्ञान किया जाता है। जैसा कि आचार्य वराहमिहिर कहते है –

जीर्ण संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्प्युद्भवम्। रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरं चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनां सामन्तपूर्वा वदेत्।।

बृह० 5.19

प्रसवकक्ष किस प्रकार का होगा इसका परिज्ञान जन्माङ्गस्थ सर्वाधिक बलशाली ग्रह से किया जाता है। यदि सर्वाधिक बलशाली ग्रह शनि हो तो पुराना नव निर्मित प्रसव कक्ष होता है। मंगल हो तो अग्नि से दग्ध, चन्द्र से नया, सूर्य से सामान्य लकडी से बना गृह, बुध से अनेक शिल्पकारी से युक्त, शुक्र से रमणीय अनेक चित्रयुक्त नवीन गृह तथा गुरु से मजबूत प्रसवकक्ष होता है। लग्न के समीप या बलवान् ग्रह के पूर्व पर समीप अर्थात् लग्न से पूर्व द्वादश भाव एवं लग्न से पश्चिम, द्वितीय भाव से सूतिका कक्ष के आस–पास के कक्ष का परिज्ञान पूर्वोक्त विधि से करना चाहिए। स्पष्टता हेतु आरेख प्रस्तुत है।

आज के इस भौतिक युग में हम अपने पूर्ववर्ती आचार्यों को भूलते जा रहे है तथा कपोल कल्पना के द्वारा अनेक प्रकार के सिद्धान्तों का महिमा मण्डन किए जा रहे हैं, किन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारे पूर्व आचार्यों के परिश्रमों एवं तपस्याओं की ही देन है जो आज हमारे समक्ष ग्रन्थ रूप में उपस्थित है। ज्योतिष एवं वास्तु का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध बहुत ही घनिष्ठ है। जन्मकालिक ग्रह स्थितियों के द्वारा भी हम जातक के वास्तु का विधिवत् परिज्ञान कर सकते हैं। अतः हमें अपने भारतीय शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन करना चाहिए। जिससे शास्त्र की मर्यादा भी बची रहे और लोक का उचित कल्याण भी हो सके तथा जनसामान्य अधर्म से भी बच सकें।❑

पता : असिस्टेंट प्रोफेसर
मुक्तस्वाध्यायपीठम् राष्ट्रीय
संस्कृतसंस्थानम्
जनकपुरी नई दिल्ली
दूरभाष : 9795888771